30/5/16 (E)

Sl. No. : 12451
Unique Paper Code : 52051416
Name of the Paper : Hindi 'B'
Name of the Course : B.Com. (Prog.)
Semester : IV

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

Duration : 3 Hours Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी गद्य के उद्भव और विकास का वर्णन कीजिए।

अथवा

हिंदी कहानी के विकास का सामान्य परिचय दीजिए। 12

2. 'नमक का दारोग़ा' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'गुंडा' कहानी के नायक 'नन्हकू सिंह' का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

3. बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'ईमानदारी' का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध का उद्देश्य लिखिए। 12

4. 'अंधेर नगरी' नाटक का उद्देश्य लिखिए।

अथवा

बिबिया का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

5. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :
   (क) भारतेंदुयुगीन नाटक
   (ख) संस्मरण का संक्षिप्त विकास 7

6. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए : (10 x 2 = 20)

   (क) नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय

हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते फिर लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ 'सोता' है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से इसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।

अथवा

ईसा की अठारहवीं शताब्दी के अंतिम भाग में वही काशी नहीं रह गयी थी, जिसमें उपनिषद के अजातशत्रु की परिषद में ब्रह्मविद्या सीखने के लिए विद्वान ब्रह्मचारी आते थे। गौतम बुद्ध और शंकराचार्य के धर्म-दर्शन के वाद-विवाद, कई शताब्दियों से लगातार मंदिरों और मठों के ध्वंस और तपस्वियों के वध के कारण प्रायः बंद से हो गये थे। यहाँ तक कि पवित्रता और छुआछूत में कट्टर वैष्णव धर्म भी उस विश्रृंखलता में, नवागंतुक धर्मोन्माद में अपनी असफलता देखकर काशी में अघोर रूप धारण कर रहा था।

(ख) अंधेर नगरी अनबूझ राजा।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।
नीच ऊँच सब एकहि ऐसे।
जैसे भड़ुए पंडित तैसे।।
कुल मरजाद न मान बढ़ाई।
सबै एक से लोग लुगाई।।
जाट पाँत पुछै नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि को होई।।

अथवा

केवल उसके स्वभाव में अभिमान की मात्रा इतनी थी कि वह दोष की सीमा तक पहुँच जाती थी। अच्छे कपड़े पहनना उसे अच्छा लगता था और वह यह शौक ग्राहकों के कपड़ों से पूरा हो जाता था। गहने भी उसकी माँ ने कम नहीं छोड़े थे। विवाह-संबंध उसके जन्म से पहले ही निश्चित हो गया था। पाँचवें वर्ष में ब्याह भी हो गया, पर गौने से पहले ही वर की मृत्यु ने उस सम्बन्ध को तोड़कर, जोड़ने वालों का प्रयत्न निष्फल कर दिया। ऐसी परिस्थिति में, जिस उच्च वर्ग को स्त्री का गृहस्थी बसा लेना कलंक है, उसी प्रकार नीच वर्ग की स्त्री का अकेला रहना सामाजिक अपराध है।